Class - B. Com II
Subject - M.F.I
Paper - IV (S)
Topic - Value of Money
Lecture Sequence - 11

By Dr. C P Sahu
Marwari College - Darbhanga

मुद्रा का मूल्य :-

वस्तुओं के मूल्यों से आशय वह मुद्रा राशि से जो उन वस्तुओं अथवा सेवाओं के बदले देनी पड़ती है। मुद्रा मूल्य का अर्थ इसके विनिमय मूल्य से है। मुद्रा का मूल्य उसकी क्रयशक्ति से है। वस्तुओं एवं सेवाओं में रुपये, डालर अथवा अन्य मुद्राओं के मूल्य नापा जा सकता है। विनिमय मूल्य से अलग मुद्रा का अपना कोई मूल्य नहीं है। जिसप्रकार आँख की अपनी रोशनी नहीं होती, वह प्राकृतिक एवं कृत्रिम रोशनी के सहायता से ही देख सकता है। ठीक उसीप्रकार मुद्रा का मूल्य इसके क्रय-शक्ति से जोड़कर देख सकते हैं। जब वस्तु के मूल्य में वृद्धि होती है तो मुद्रा के मूल्य में कमी हो जाती है।

रावर्टसन के अनुसार - मुद्रा के मूल्य से तात्पर्य वस्तुओं की उस मात्रा से है जो ~~साधारणतः~~ मुद्रा की एक इकाई से विनिमय में प्राप्त होती है।

क्राउथर के अनुसार - मुद्रा जो खरीदेगी वही इसका मूल्य है।

आधुनिक युग में मुद्रा के मूल्य को निम्न तरीकों से स्पष्ट किया जा सकता है :-

① क्रयशक्ति - मुद्रा की एक इकाई के बदले में कितनी वस्तुएँ तथा सेवाएँ प्राप्त की जाती है। यह क्रयशक्ति तुलनात्मक रूप में नापी जाती है। किसी एक वर्ष में एक रुपये के बदले में जितनी वस्तुएँ तथा सेवाएँ प्राप्त हो सकती हैं उसकी तुलना में कितनी कम या अधिक प्राप्त हो सकती है

② ब्याजदर - मुद्रा मूल्य का एक अन्य प्रचलित अर्थ है ब्याज की दर अर्थात मुद्रा को एक निश्चित अवधि, प्रायः एक वर्ष के लिए,

उधार लेने पर कितनी रकम मिल सकती है। इस अर्थ में मुद्रा-मूल्य का प्रयोग प्रायः कम होता है। (2)

(3) **विदेशी विनिमय दर (Foreign Exchange rate)** - विदेशी विनिमय दर का अर्थ होता है देश की मुद्रा की एक इकाई के बदले किसी देश की कितनी मुद्रा प्राप्त की जा सकती है जैसे एक डालर प्राप्त करने के लिए लगभग 70 रुपये देने पड़ें तो विनिमय दर $1 = Rs.70

मुद्रा के मूल्य निर्धारण का सिद्धान्त :

(1) **मुद्रा का वस्तु सिद्धान्त :-**

मुद्रा का मूल्य सरकार द्वारा निर्धारित होता है। चलन मुद्रा की आत्मा उसकी इकाइयों में प्रयुक्त किये गये पदार्थ में नहीं बल्कि उन वैधानिक अध्यादेशों से है जो इसके प्रयोग का नियमन करते हैं।

मुद्रा के वस्तु सिद्धान्त मुद्रा के मूल्य निर्धारण का प्राचीनतम सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार अन्य वस्तुओं की तरह मुद्रा का मूल्य भी माँग एवं पूर्ति के द्वारा संतुलित होता है।

Scanned with CamScanner

आज विश्व के सभी देशों में पत्र मुद्रा का प्रचलन हो गया है। (3)
पत्र मुद्रा कागज की बनी होती है जिसका आन्तरिक मूल्य शून्य होता है। मुद्रा की मांग एवं पूर्ति से तात्पर्य उस वस्तु की मांग एवं पूर्ति से है जिससे मुद्रा बनायी जाती है। मुद्रा का मूल्य उस धातु के बाजार मूल्य से शासित होता है जिससे मुद्रा बनी है। यही लागू होता है जब मुद्रा पदार्थ का आन्तरिक मूल्य हो।

सरकार मुद्रा के मूल्य को निम्न तरीके से निर्धारित करती है:-

(1) वैधानिक मान्यता (Legal Recognition) सरकार वैधानिक मान्यता के बल पर जनता का मुद्रा में विश्वास उत्पन्न करती है। इस वैधानिकता तथा विश्वास के कारण ही मुद्रा समस्त लेन-देन का माध्यम बनी हुई है।

(2) वस्तु मूल्य का निर्धारण :- कभी कभी वस्तुओं के मूल्य निर्धारण द्वारा सरकार प्रत्यक्ष रूप में मुद्रा के मूल्य निश्चित कर देती है।

(3) मात्रा में परिवर्तन - सरकार एक निश्चित नीति के अनुसार

मुद्रा की चलन मात्रा में परिवर्तन करती है और इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप में उसके मूल्य को प्रभावित करती है।

(2) **मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त** – मुद्रा एक ऐसा पदार्थ है जिसमें सब वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य नापे जाते हैं।

केन्स के शब्दों में – "मुद्रा की क्रयशक्ति किसी विशेष स्थिति में वस्तुओं और सेवाओं की उस मात्रा पर आधारित होती है जो मुद्रा की एक इकाई खरीद सकती है।"

मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त को एक समीकरण के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :-

$$P = \frac{M}{T}$$

P = वस्तुओं एवं सेवाओं का कीमत स्तर
M = देश में प्रचलित मुद्रा की मात्रा
T = व्यापार की मात्रा

संशोधित समीकरण – $P = \frac{MV}{T}$

इसी तरह फिशर का समीकरण – $PT = MV + M'V'$

$$P = \frac{MV + M'V'}{T}$$

M = मुद्रा की कुल मात्रा
V = विधिग्राह्य मुद्रा का चलन वेग, M' = साख मुद्रा
V' = साख मुद्रा का चलन वेग ~~P = साख~~

Scanned with CamScanner

P = वस्तुओं और सेवाओं की कीमत-स्तर, T = व्यापार की मात्रा

मार्शल का समीकरण - $M = KY + K'A$

M = मुद्रा की कुल चलन मात्रा तथा बैंकों के पास चालू जमा

Y = कुल मौद्रिक वार्षिक आय K = आय का वह भाग जिसे लोग नकद के रूप में रखते हैं। K' = सम्पत्ति का वह भाग जिसे मुद्रा के रूप में रखा जाता है।

A = सम्पत्ति का कुल मूल्य।

उपर्युक्त समीकरण के अध्ययन के बाद प्रो० केन्स ने कैम्ब्रिज समीकरण का संशोधित रूप इस प्रकार प्रस्तुत किया है:-

$n = P(K + rK')$

n = मुद्रा की मात्रा, P = सामान्य कीमत-स्तर, K = उपभोग की इकाइयों

r = बैंकों द्वारा अपने जमा के पीछे रखी जाने वाली नकद राशि का अनुपात

K' = उपभोग की इकाइयों की वह मात्रा जिसके लिए क्रय-शक्ति को साख मुद्रा के रूप में रखा जाता है।

— X —